ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 608-609
www.allresearchjournal.com
Received: 10-01-2019
Accepted: 15-02-2019

डॉ. अनिल गुप्ता
सह आचार्य–चित्रकला, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिल गुप्ता
सह आचार्य–चित्रकला, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर, राजस्थान, भारत

एस.एच.रज़ा का ज्यामितीय चित्र संसार

डॉ. अनिल गुप्ता

सारांश
रज़ा का नाम आते ही मन के कैनवास पर विभिन्न ज्यामितीय आकार उभरनें लगते हैं। उनके सम्पूर्ण कला सृजन का प्रमुख आधार ज्यामितीय रूप ही हैं। रज़ा ने फ्रांस में अध्ययन के दौरान वहाँ की तकनीक सीखी लेकिन जड़े भारत में ही रहीं।
रजा के चित्रों का अध्ययन करेगें तो पायेंगे कि उनका कला संसार दो समानांतर जिज्ञासाओं का प्रतिफल है। प्रथम कल्पनाओं का शुद्ध सुघाट्य रूप तथा दूसरा विषय के रूप में प्रकृति का चुनाव दोनों जिज्ञासाऐं एक जगह आकर एक बिंदू पर मिल जाती है।
रजा की कला रचना की शुरूआत बिन्दु से हुई फिर धीरे–धीरे इसमें नये आयामों को जोड़ते गये और एक लम्बी चित्र श्रृंखला को निर्मित किया। रज़ा ज्यामितीय रूपाकारों को सृजनात्मक रूप में स्वीकारते हैं। रूढ़िवादिता के रूप में नहीं।

कूट शब्द : अस्तित्व, बीज, टैक्सचर, स्मृतियों, एक्रेलिक, प्रतीकात्मक, इम्प्रेशनिष्ट

प्रस्तावना
रज़ा का कलाकर्म 20वीं सदी से 21वीं सदी तक फैला हुआ है। आधुनिक कला के क्षेत्र में उपने कला कर्म के जरिए देश–विदेश में अपनी पहचान बनाने वाले रज़ा का पूरा नाम सैयद हैदर रज़ा है जिनका जनम मध्यप्रदेश के बावरिया नामक स्थान पर हुआ। 30 मार्च 1922 ई. को जन्में रज़ा का नाम जब जहन में आता है तो मन के केनवास पर विभिन्न ज्यामितीय आकार उभरने लगते है।
ज्यामितीय रूपाकारों को अपने चित्रों में निरूपित करने की रज़ा की अपनी निजी शैली है। उनके सम्पूर्ण कला सृजन का प्रमुख आधार ज्यामितीय रूप ही है जो उनके चित्रों की विशेषता भी है जिसके कारण उनके चित्र कलाकारों की भीड़ भाड़ में अपना पृथक अस्तित्व बनाने में सफल हुए।
रज़ा के सम्पूर्ण चित्र विधान को समझने से पूर्व उन स्त्रोतों, कारणों को जानाना आवश्यक है जिनसे प्रेरित होकर चित्र निर्माण के पथ पर अग्रसर हुए। प्रकृति और बिन्दु उनके चित्र निर्माण में प्रेरणादायक सिद्ध हुए।
प्रकृति के वन, नदियां, पहाड़, पेड़, सूर्य, पर्वत ज्यामितीय रूपाकारों में प्रतीक स्वरूप उनके चित्रों में सदैव विद्यमान रहे है। ज्यामितीय रूपकारों द्वारा दृष्य जगत की रहस्मयता को एक नयी कला भाषा के रूप में परिभाषित करते है। इनकी कृतियां अतीत की समृतियों का ही पुन निर्माण है जो कैनवास पर रंगों, ज्यामितीय रूपकारों के रूप में एक नये परिवेश में प्रकट होती है।
मध्यप्रदेश के जंगल, कबीलों के नगाड़ों की धुन, सूर्य की प्रचण्ड किरणें नर्मदा का पवित्र जल, रात का घना अन्धकार रज़ा के बाल मन मस्तिष्क में हमेशा के लिए बस गए और आजीवन कला सृजन हेतु प्रेरित करते रहे। फ्रांस में अध्ययन के दौरान एकोल द बोजार में इसी चेतना को जीवित रखा। फ्रांस से तकनीकी सीखी लेकिन उनकी सोच की जड़े भारत में ही फैली हुई थी।
रज़ा के चित्र विभिन्न ज्यामितीय रूपाकारों से समृद्ध है। लेकिन बिन्दु उनके चित्रों का मुख्य आकर्षण है। बिन्दु उस बीज का वाहक है जिसमें जीवन की अपार संभावनाएँ निहित है। रज़ा जब 8 वर्ष के थे तब एक शिक्षक के माध्यम से ध्यान करते हुए बिन्दु से परिचय हुआ।
यदि रज़ा के चित्रों का अध्ययन करे तो पायेंगे कि उनका कला संसार दो समानानतर जिज्ञासाओं का प्रतिफल हे। प्रथम कल्पनाओं का शुद्ध सुघाट्य रूप तथा दूसरा विषय के रूप में प्रकृति का चुनाव दोनों जिज्ञासाएं एक जगह आकर एक बिन्दु पर मिल जाती है।
बिन्दु मात्र गोला, सर्कल नहीं अपितु अस्तित्व और रचना का केन्द्र है। बिन्दु एक सीक सिम्बल है जो प्रतीक भी है और बीज भी। बीज सेजीवन की उत्पत्ति तथा सृष्टि की रचना होती है। रज़ा ने जीवन पर्यन्त बिन्दु बीज पर निरन्तर नवीन प्रयोग किए। बिन्दु हर कलाकृति में नये रंग, रूप, टैक्सचर के साथ प्रकट होता है और अपने में कई अर्थ पहलुओं को साथ लाता है।

बिन्दु को बनाने का तरीका चाहे अलग–अलग हो लेकिन उनका प्रेरणा स्त्रोत एक बीज ही है। चित्रों में कभी बिन्दु अंधेरे से उजाले की ओर तो कभी प्रकाश फैलाता प्रतीत होता है।

रज़ा के चित्रों में बिनदु के साथ त्रिभुजाकृति भी बहुत दिखाई देती है। उल्टी और सीधी दोनों त्रिभुजाकृतियां संयोजन में प्रयुक्त हुई है। ये त्रिभुजाकृतियां कभी एक दूसरे में मिलती हुई कभी टकराती हुई तो कभी पर्वतों की कतार सी नजर आती है।

ज्यामितीय रूपाकारों के अत्यधिक प्रयोग पर तंत्र कला के प्रभाव जैसे प्रश्नों पर रज़ाा स्पष्ट रूप से खण्डन करते हुए कहते है। कि ये ज्यामितीय आकार (त्रिभुज, वृत्त, वर्ग, आयत) तंत्र कला से प्रेरित नहीं अपितु प्रकृति से प्रेरित है। चांद, सूरज बिन्दु, जमीन है। तंत्र एक बहुत जटिल क्रिया है। और उसके बारे में मेरा ज्ञान सीमित है। चित्रकार रज़ा ने कभी अपने को तांत्रिक कलाकार स्वीकार नहीं किया।

प्रारम्भ में रज़ा ने गांव, शहरी दृश्य बनाए बाद में फीगर, नयूड, स्टडीज लाईफ, पोट्रेट भी बनाए लेकिन रज़ा ह्यूमन फीगर की अपेक्षा प्राकृतिक दृश्य चित्र सहजता से बनाते जो आगे उनकी प्रेरणा के स्त्रोंत बने। रज़ा पोस्ट इम्प्रेशनिस्ट (उत्तर प्रभाववाद) कलाकार, गॉग्व, सेजान, वान गॉग के चित्रों से प्रभावित थे।

रज़ा की चित्राकृतियों का वर्णन रंगों के बिना अधूरा है। रज़ा के चित्रों में आकार यदि शरीर है तो रंग उनमें जान डालने/फूंकने का काम करते है। रज़ा एक्रेलिक, तेल रंग में समृद्ध चित्र रचनाएं करते है। रज़ा आकारों की तरह रंगों का प्रयोग भी प्रतीकात्मक रूप में करते है। प्रत्येक रंग अपने में विशेष अर्थ लिए होता है। रज़ा के रंग प्रकृति के रंग है। सूर्य की तेज चमक को देखकर यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि रज़ा के रंग इतने चमकदार क्यों है साथ ही चन्द्रमा की रोशनी सी शीतलता भी उनके रंगों में चित्रों के द्वारा महसूस की जा सकती है। रज़ा के चित्रों में रंग और आकार इस तरह से संयोजित हे कि वे किसी भी स्थल पर पूर्ण कहे जा सकते है। रज़ा के चित्र उनकी रेखाओं के लिए नहीं रंगों के लिए जाने जाते है।

रज़ा ने अधिकतर तेल, रंग, एकेलिक रंग में चित्रण किया है। ऊर्जा से परिपूर्ण ये रंग कभी एक–दूसरे में मिलते हुए तो कभी एक–दूसरे से दूर भागते प्रतीत होते है। जो मन में उठने वाले, विभिन्न विचारों को प्रकट करते हे। रज़ा का कार्य केवल रंग की ऊर्जा को कैनवास पर आकारों के साथ व्यवस्थित करना है।

रज़ा के चित्र सृजन की विकास यात्रा बहुत लम्बी है। रज़ा 20वीं सदी एवं इक्कीसवीं सदी में कला सृजन करने वाले प्रमुख कलाकार है। हम यहां पर उनके द्वारा 20वीं सदी में बनायी गयी महत्वपूर्ण कृतियों के बारे में चर्चा करेंगे। जिनमें उन्होंने ज्यामितीय रूपाकारों का अधिकाधिक प्रयोग किया है।

रज़ा की कला रचना की शुरूआत बिन्दु से हुई फिर धीरे–धीरे इसमें नये आयामों को जोड़ते गये और एक लम्बी चित्र श्रृंखला को निर्मित किया। रज़ा ज्यामितीय रूपकारों को सृजनात्मक रूप में स्वीकारते है। रूढ़िवादिता के रूप में नहीं।

20वीं सदी में ज्यामितीय रूपाकारों को लेकर बनायी गयी। प्रमुख कृतियों में ब्लेक सन् (1953), बिन्दु 1982, अंकुरण (1986), जर्मिनेशन (1987), जला बिन्दु (1990), चमत्कार (1996), कलियां (1990), बीज (1988), सूर्य नमस्कार, सौराष्ट्र (1983), जेस्टेशन (1989), प्रकृति पुरूष, आदि प्रमुख है।

1960 के दशक में बनायी गयी पेंटिंग्स में ज्यामितीय रूपाकारों के प्रति आग्रह दिखाई देता है। 'ब्लेक सन्' 1953 ई. में बनायी गयी ये पेटिंग 45 X 47 सेमी. आकार की एक्रेलिक माध्यम में बनायी गयी है। इसमें संसार को दो भागों काले व सफेद में विभाजित दिखाया है जो संसार के दो पक्षों (दिन, रात, आशा–निराशा) को उजागर करते है। एक पंक्ति में बॉक्स जैसे घर वर्गाकार, घनाकार, खड़ी रेखाओं को काटकर बनाये गए हे। नारंगी रोशनी में ये घर चमकते हुए दिख रहे है।

'बिन्दु' शीर्षक चित्र में एक वृत्त लाल रंग की वर्गाकार पृष्ठभूमि में स्थापित है। वर्ग के चारों ओर नीले, हरे रंग की वर्गाकार पट्टी है। जिससे देखने वाले का ध्यान सीधा बिन्दु/वृत्त पर जाता है। 'अंकुरण' शीर्षक चित्र की रचना रज़ा ने 'बिन्दु' चित्र से प्रेरित होकर की है। 200 ग 200 सेमी. आकार का ये चित्र एक्रेलिक माध्यम में बनाया है। सोलह चौखानों में चित्र धरातल को बांटकर खानों में प्रकृति को प्रतिबिम्बित करने वाले ज्यामितीय आकार अंकित किये गये हैं जिनमें नीचे हरे, काले, लाल, गेरूए रंग का प्रयोग किया गया है। चित्र निर्माण के पीछे प्रमुख प्रेरणा स्त्रोत प्रकृति ही है।

1990 ई. में बनाया गया चित्र 'कलियां' 160 ग 80 सेमी. आकार का एक्रेलिक माध्यम में बना है। चित्र धरातल को दो भागों में बांटकर ऊपर वाले भाग को छः चौखानों में बांटा है। जिसमें ज्यामितीय रूपाकारों में बनी ये गुनगुनाती कलियां, हरे, नीले रंग के मधुर संयोजन में अपनी मधुर मुस्कान बिखेरती नजर आ रही है। रंगों के संग शब्दों का चित्रात्मक संयोजन मन को मोहित किए बिना नहीं रहता। रज़ा के अनय चित्रों में 'जेस्टेशन' जर्मिनेशन 'बिन्दु बीज मंत्र' इत्यादि है।

रज़ा एक लैंडस्केप चित्रकार भी थे। एक समय ऐसा भी था जब उनके पास अपनी भावनाओं को व्यकत करने के लिए न तो कोई भाषा न ही आकार था लेकिन वर्षो के गहन अध्ययन के बाद उनके चित्रों में भावों को व्यक्त करने के लिए जगमगाते रंग, आकार, ऊर्जा से भरा बीज है, अंकुरण प्रकट होने लगे तथा आदि से अनंत पहुंचने की कला यात्रा में सहायक सिद्ध हुए। रजा के भावों को नई भाषा, रूप देने में ज्यामितीय रूपाकारों की महत्ती भूमिका रहीं।

संदर्भ

1. गांगुली, मंजूषा, चित्रकार रजा, परम्परा और परिवेश , समानान्तर प्रकाशन नई दिल्ली, 110002 पृ.62.
2. रजा, समकालीन भारतीय कला श्रृंखला, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।
3. Vajpeyi, Ashok, Understanding Raza, Many way of looking at a Master, Vedehra art gallery, New Delhi; c2013. p. 154
4. समकालीन कला, नवम्बर 84, मई 85, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।
5. जोशी, जयोतिष, भारतीय कला के हस्ताक्षर, प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2006 पृ.74.
6. समकालीन कला पत्रिका, 18 नवम्बर, 2000, ललित कला अकादमी, रविन्द्र भवन, नई दिल्ली।
7. वाजपेयी, अशोक, कलापद्धति यश पब्लिकेशन, चांद महोल्ला, गांधी नगर, दिल्ली, 2010.
8. https://www.theheritagelab.in/sh-raza-art/
9. Vajpeyi, Ashok, Raza, Text Interview. Ravi Kumar Publisher, Bookwise (India) Pvt. Ltd., New Delhi.
10. Raza SH. Swasti Celebration 85 Years, Selected Works, National Gallery of Modern Art, Jaipur House India Gate New Delhi.